

قرآن مجید

لफ़ज़ी तरजुमा

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ

पारा - 27

eParah

قَالَ	فَبَا	خُطْبُكُمْ	أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿31﴾	قَالُوا	إِنَّا	أُرْسِلْنَا
उसने कहा	तो क्या	मामला है तुम्हारा	ऐ भेजे जाने वालो (फ़रिश्तो)	उन्होंने कहा	बेशक हम	भेजे गए हम
إِلَى قَوْمٍ	مُّجْرِمِينَ ﴿32﴾	لِنُرْسِلَ	عَلَيْهِمْ	حِجَارَةً	مِّنْ طِينٍ ﴿33﴾	
तरफ़ उन लोगों के	जो मुजरिम हैं	ताकि हम भेजें	उन पर	पत्थर	मिट्टी के	
مُسَوَّمَةً	عِنْدَ رَبِّكَ	لِلْمُسْرِفِينَ ﴿34﴾	فَاخْرَجْنَا	مَنْ	كَانَ	
निशानज़दा	तेरे रब के यहाँ से	हद से बढ़ने वालों के लिए	तो निकाल लिया हमने	जो कोई	था	
فِيهَا	مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿35﴾	فَبَا	وَجَدْنَا	فِيهَا	غَيْرَ	بَيْتٍ
उसमें	मोमिनों में से	तो ना	पाया हमने	उसमें	सिवाए	एक घर के
مِّنَ السَّالِفِينَ ﴿36﴾	وَتَرَكْنَا	فِيهَا	آيَةً	لِّلَّذِينَ	يَخَافُونَ	
मुसलमानों में से	और छोड़ दी हमने	उसमें	एक निशानी	उन लोगों के लिए जो	डरते हैं	
الْعَذَابَ	الْأَلِيمَ ﴿37﴾	وَفِي مُوسَى	إِذْ	أَرْسَلْنَاهُ	إِلَىٰ فِرْعَوْنَ	
अज़ाब	दर्दनाक से	और मूसा में (निशानी है)	जब	भेजा हमने उसे	तरफ़ फ़िराऊन के	
بِسُلْطَانٍ	مُّبِينٍ ﴿38﴾	فَتَوَلَّى	بِرُّكْنِهِ	وَقَالَ	سِحْرٌ	أَوْ
साथ दलील	खुली के	तो उसने मुंह मोड़ लिया	बवजह अपनी कुव्वत के	और वो कहने लगा	जादूगर है	या
مَجْنُونٌ ﴿39﴾	فَاخْذُنْهُ	وَجُنُودَهُ	فَنَبَذْنَاهُمْ	فِي الْيَمِّ	وَهُوَ	
मजनून	तो पकड़ लिया हमने उसे	और उसके लश्करो को	तो फेंक दिया हमने उन्हें	समुन्दर में	और वो	
مُלِيمٌ ﴿40﴾	وَفِي عَادٍ	إِذْ	أَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمُ	الرِّيحَ	الْعَقِيمَ ﴿41﴾
मलामत ज़दा था	और आद में (निशानी है)	जब	भेजा हमने	उन पर	हवा	बांझ को
مَا	تَذَرُ	مِنْ شَيْءٍ	أَتَتْ	عَلَيْهِ	إِلَّا	جَعَلَتْهُ
ना	उसने छोड़ा	किसी चीज़ को	वो आई	जिस पर	मगर	उसने कर दिया उसे
						गालरमिम ﴿42﴾
						बोसीदा हड्डी की तरह

وَفِي ثَمُودَ	إِذْ	قِيلَ لَهُمْ	تَمَتَّعُوا	حَتَّىٰ حِينٍ ④③	فَعَتَوْا
और समूद में (निशानी है)	जब	कहा गया	उनसे	तुम फ़ायदा उठा लो	एक वक़्त तक
عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ	فَاخَذَتْهُمْ	الصُّعِقَةُ	وَهُمْ	يَنْظُرُونَ ④④	فَبَا
अपने रब के	तो पकड़ लिया उन्हें	बिजली की कड़क ने	इस हाल में कि वो	वो देख रहे थे	तो ना
اسْتَطَاعُوا	مِنْ قِيَامٍ	وَمَا	كَانُوا	مُنْتَصِرِينَ ④⑤	وَقَوْمَ نُوحٍ
वो इस्तिताअत रखते थे	खड़े होने की	और ना	थे वो	बदला लेने वाले	और क्रौमे
مِنْ قَبْلُ ④	إِنَّهُمْ	كَانُوا	قَوْمًا	فَسِقِينَ ④⑥	وَالسَّاءَ
इससे क़बल	बेशक वो	थे वो	लोग	फ़ासिक़	और आसमान
بَايِدٍ	وَإِنَّا	لَبُوسِعُونَ ④⑦	وَالْأَرْضَ	فَرَشْنَاهَا	فَنِعَمَ
साथ कुव्वत के	और बेशक हम	अलबत्ता वुसअत देने वाले हैं	और ज़मीन को	बिछाया हमने उसे	तो कितने अच्छे
الْبَهْدُونَ ④⑧	وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ	خَلَقْنَا	زَوْجَيْنِ	لَعَلَّكُمْ	تَذَكَّرُونَ ④⑨
हमवार करने वाले हैं	और हर चीज़ से	बनाए हमने	जोड़े	ताकि तुम	तुम नसीहत पकड़ो
فَفِرُّوْا إِلَى اللَّهِ ④	إِنِّي	لَكُمْ	مِّنْهُ	نَذِيرٌ	مُّبِينٌ ④⑩
तरफ़ अल्लाह के	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	उसकी तरफ़ से	डराने वाला हूँ	खुल्लम-खुल्ला
وَلَا تَجْعَلُوا	مَعَ	اللَّهِ	إِلَهًا	آخَرَ ④	إِنِّي
तुम बनाओ	साथ	अल्लाह के	इलाह	कोई दूसरा	बेशक मैं
نَذِيرٌ	مُّبِينٌ ④⑪	كَذَلِكَ	مَا	آتَى	الَّذِينَ
डराने वाला हूँ	खुल्लम-खुल्ला	इसी तरह	नहीं	आया	उनके पास जो
مِّنْ قَبْلِهِمْ	مَنْ رَّسُولٍ	إِلَّا	قَالُوا	سَاحِرٌ	أَوْ
उनसे पहले थे	कोई रसूल	मगर	उन्होंने कहा	जादूगर है	या
مَجْنُونٌ ④⑫	أَتَوَاصُوا				
मजनून	क्या वो एक दूसरे को वसीयत कर गए				

بِهِ ٥٣	بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ٥٣	فَتَوَلَّى عَنْهُمْ	فَبَا	أَنْتَ
उसकी	बल्कि	वो	लोग हैं	सरकश
पस मुंह मोड़ लीजिए	उनसे	पस नहीं	आप	

بِسُلُومٍ ٥٤	وَذَكَرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ٥٥	وَمَا
क्राबिले मलामत	और नसीहत कीजिए	पस बेशक
नसीहत	वो फ़ायदा देती है	मोमिनों को
और नहीं		

خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ٥٦	مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ
जिन्नों	और इंसानों को
मगर	इस लिए कि वो इबादत करें मेरी
नहीं	मैं चाहता
उनसे	

مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُونَ ٥٧	إِنَّ اللَّهَ هُوَ
कोई रिज़क	और नहीं
मैं चाहता	कि
वो खिलाएँ मुझे	बेशक
अल्लाह	वो ही है

الرِّزْقِ ذُو الْقُوَّةِ الْبَتِّينِ ٥٨	فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا
ख़ूब रिज़क देने वाला	कुव्वत वाला
निहायत मज़बूत	तो बेशक
उनके लिए जिन्होंने	ज़ुल्म किया
हिस्सा है	

مِثْلَ ذُنُوبٍ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ٥٩	فَوَيْلٌ
मानिंद	हिस्से के
उनके साथियों के	पस ना
वो जल्दी तलब करें मुझसे	पस हलाकत है

لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ٦٠
उन लोगों के लिए जिन्होंने
कुफ़ किया
उनके उस दिन से
जिसका
वो वादा दिए जाते हैं

آيَاتُهَا: 49	سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ 76	رُكُوعَاتُهَا: 2
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ		

وَالطُّورِ ١	وَكِتَابٍ مَسْطُورٍ ٢	فِي رَقٍّ مَنُشُورٍ ٣	وَالْبَيْتِ
क्रसम है तूर की	लिखी हुई की	वरक़ में	खुले हुए
और किताब			और घर की

الْمَعُورِ ٤	وَالسَّقْفِ الْهَرَفُوعِ ٥	وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ٦	إِنَّ
जो आबाद है	और छत की	जो ऊंची उठाई गई है	और समुन्दर की
जो भड़काया हुआ है	बेशक		

عَذَابَ	رَبِّكَ	لَوَاقِعٌ ۙ	مَا	لَهُ	مِنْ دَافِعٍ ۝۸	يَوْمَ	تَمُورُ
अज़ाब	आपके रब का	यक़ीनन वाक़ेअ होने वाला है	नहीं	उसे	कोई दूर करने वाला	जिस दिन	लरज़ेगा
السَّهَاءِ	مَوْرًا ۙ	وَتَسِيرُ	الْجِبَالُ	سَيْرًا ۝۱०	فَوَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ	
आसमान	सख़्त लरज़ना	और चलेंगे	पहाड़	बहुत चलना	पस हलाकत है	उस दिन	
لِلْمُكَذِّبِينَ ۙ	الَّذِينَ	هُمْ	فِي خَوْضٍ	يَلْعَبُونَ ۝۱२	يَوْمَ		
झुठलाने वालों के लिए	वो लोग जो	वो	बहस में	वो खेल रहे हैं	जिस दिन		
يَدْعُونَ	إِلَى نَارٍ	جَهَنَّمَ	دَعَا ۝۱३	هَذِهِ	النَّارُ	الَّتِي	كُنْتُمْ
वो ढकेले जाएंगे	तरफ़ आग के	जहन्नम की	सख़्त ढकेले जाना	ये है	आग	वो जो	थे तुम
بِهَا	تُكَذِّبُونَ ۝۱४	أَفِسْحُرْ	هَذَا	أَمْ	أَنْتُمْ	لَا تُبْصِرُونَ ۝۱५	
उसको	तुम झुठलाते	क्या भला जादू है	ये	या	तुम	नहीं तुम देखते	
إِصْلَوْهَا	فَاصْبِرُوا	أَوْ	لَا تَصْبِرُوا ۝	سَوَاءٌ	عَلَيْكُمْ ۝	إِنَّمَا	
जलो इसमें	पस सब्र करो	या	ना तुम सब्र करो	बराबर है	तुम पर	बेशक	
تُجْزَوْنَ	مَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُونَ ۝۱६	إِنَّ	الْمُتَّقِينَ	فِي جَنَّتٍ	
तुम बदला दिए जाते हो	उसका जो	थे तुम	तुम अमल करते	बेशक	मुत्तक़ी लोग	बाग़ात में	
وَنَعِيمٌ ۝۱७	فَكِهِينَ	بِمَا	أَتَاهُمْ	رَبُّهُمْ ۝	وَوَقَّاهُمْ		
और नेअमतों में होंगे	मज़े करने वाले होंगे	साथ उसके जो	अता किया उन्हें	उनके रब ने	और बचा लेगा उन्हें		
رَبُّهُمْ	عَذَابَ	الْجَحِيمِ ۝۱८	كُلُوا	وَأَشْرَبُوا	هَنِيئًا	بِمَا	كُنْتُمْ
रब उनका	अज़ाब से	जहन्नम के	खाओ	और पियो	मज़े से	बवजह उसके जो	थे तुम
تَعْمَلُونَ ۝۱९	مُتَّكِئِينَ	عَلَى سُرُرٍ	مَّصْفُوفَةٍ ۝	وَزَوْجُهُمْ			
तुम अमल करते	तकिया लगाए हुए होंगे	तख़्तों पर	क़तार में रखे हुए	और ब्याह देंगे हम उन्हें			

بِحُورٍ	عَيْنٍ ②٠	وَالَّذِينَ	أَمَنُوا	وَاتَّبَعْتَهُمْ	ذُرِّيَّتَهُمْ
साथ गोरी औरतों के	बड़ी आंखों वाली	और वो लोग जो	ईमान लाए	और पैरवी की उनकी	उनकी औलाद ने
بِإِيْمَانٍ	الْحَقْنَآ	بِهِمْ	ذُرِّيَّتَهُمْ	وَمَا	الَّتَنَّهُمْ
साथ ईमान के	मिला देंगे हम	साथ उनके	उनकी औलाद को	और ना	कमी करेंगे हम उनसे
مِّنْ شَيْءٍ ٭	كُلُّ	أَمْرٍ	بِمَا	كَسَبَ	رَهِيْنٌ ②١
कुछ भी	हर	शख्स	बवजह उसके जो	उसने कमाई की	रहन/गिरवी है
بِفَاكِهَةٍ	وَلَحْمٍ	مِّمَّا	يَشْتَهُونَ ②٢	يَتَنَازَعُونَ	فِيهَا
फल	और गोश्त	उसमें से जो	वो ख्वाहिश करेंगे	वो एक दूसरे से छीना-झपटी करेंगे	उसमें
كَأْسًا	لَّا لَعُوْ	فِيهَا	وَلَا	تَأْتِيْمٌ ②٣	وَيُطَوَّفُ
जामे शराब पर	ना कोई बेहूदा गोई होगी	उसमें	और ना	कोई गुनाह (की बात)	और घूम रहे होंगे
غِلْمَانٌ	لَّهُمْ	كَأَنَّهُمْ	لَوْ لَوْ	مَكْنُونٌ ②٤	وَأَقْبَلَ
नौउम्र ख़ादिम	उनके लिए	गोया कि वो	मोती हैं	छुपाए हुए	और मुतावज्जह होंगे
عَلَى بَعْضٍ	يَتَسَاءَلُونَ ②٥	قَالُوا	إِنَّا	كُنَّا	قَبْلُ
बाज़ पर	वो एक दूसरे से सवाल करेंगे	वो कहेंगे	बेशक हम	थे हम	इससे पहले
مُشْفِقِينَ ②٦	فَنَنْ	اللَّهُ	عَلَيْنَا	وَوَقْنَا	عَذَابَ
डरने वाले	पस एहसान किया	अल्लाह ने	हम पर	और उसने बचा लिया हमें	अज़ाब से
إِنَّا	كُنَّا	مِنْ قَبْلُ	نَدْعُوهُ ٭	إِنَّهُ	هُوَ
बेशक हम	थे हम	इससे पहले	हम पुकारा करते उसी को	बेशक वो	वो ही है
الرَّحِيْمُ ②٨	فَذَكِّرْ	فَبَا	أَنْتَ	بِنِعْمَتِ	رَبِّكَ
निहायत रहम करने वाला	पस नसीहत कीजिए	पस नहीं	आप	फ़ज़ल से	अपने रब के
وَلَا	بِكَاهِنٍ	وَلَا	وَلَا	وَلَا	وَلَا
और ना	कोई काहिन	और ना	और ना	और ना	और ना

مَجْنُونٌ 29 ط	أَمْ	يَقُولُونَ	شَاعِرٌ	تَتَرَبَّصُّ	بِهِ
मजनून	या	वो कहते हैं	एक शायर है	हम इंतज़ार कर रहे हैं	उसके बारे में
رَيْبَ الْمُنُونِ 30	قُلْ	تَرَبَّصُوا	فَإِنِّي	مَعَكُمْ	مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ 31 ط
गर्दिशे ज़माना (मौत) का	कह दीजिए	इंतज़ार करो	पस बेशक मैं	साथ तुम्हारे	इंतज़ार करने वालों में से हूँ
أَمْ	تَأْمُرُهُمْ	أَحْلَامُهُمْ	بِهَذَا	أَمْ	هُمْ
या	हुक्म देती हैं उन्हें	अक़लें उनकी	उसका	या	वो
أَمْ	يَقُولُونَ	تَقُولُهُ 32 ج	بَلْ	لَا يُؤْمِنُونَ 33 ج	فَلْيَأْتُوا
या	वो कहते हैं	उसने गढ़ लिया है उसे	बल्कि	नहीं वो ईमान लाते	पस चाहिए कि वो लाएँ
مِثْلَهُ	إِنْ	كَانُوا	صَادِقِينَ 34 ط	أَمْ	خُلِقُوا
इस जैसी	अगर	हैं वो	सच्चे	या	वो पैदा किए गए
أَمْ	هُمْ	الْخُلُقُونَ 35 ط	أَمْ	خَلَقُوا	السَّهَوَاتِ
या	वो	पैदा करने वाले हैं	या	उन्होंने पैदा किया	आसमानों
لَا يُوقِنُونَ 36 ط	أَمْ	عِنْدَهُمْ	خَزَائِنُ	رَبِّكَ	أَمْ
नहीं वो यकीन करते	या	उनके पास	खज़ाने हैं	आपके रब के	या
الْبَصِيطَرُونَ 37 ط	أَمْ	لَهُمْ	سُلَمٌ	يَسْتَبْعُونَ	فِيهِ 38 ج
निगहबान हैं	या	उनके लिए	कोई सीढ़ी है	वो शीर से सुनते हों	उसमें (चढ़ कर)
مُسْتَبْعُهُمْ	بِسُلْطَنِ	مُبِينٍ 38 ط	أَمْ	لَهُ	الْبَنَاتِ
उनका सुनने वाला	कोई दलील	खुली	या	उसके लिए हैं	बेटियाँ
الْبَنُونَ 39 ط	أَمْ	تَسْأَلُهُمْ	أَجْرًا	فَهُمْ	مِّنْ مَّغْرَمٍ
बेटे	या	आप मांगते हैं उनसे	कोई अजर	तो वो	तावान से
مُثْقَلُونَ 40 ط					

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ 41 ط	أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ط	أَمْ	أَمْ	أَمْ	أَمْ	أَمْ	أَمْ
या	उनके पास	गैब है	तो वो	वो लिख रहे हैं	या	वो इरादा करते हैं	एक चाल का
فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمْ	الْبَكِيدُونَ 42 ط	أَمْ	لَهُمْ	إِلَهُ غَيْرُ	فَالَّذِينَ	كَفَرُوا	هُمْ
तो वो जिन्होंने	कुफ़ किया	वो ही	चाल में आने वाले हैं	या	उनके लिए	कोई इलाह है	सिवाए
اللَّهُ ط	سُبْحَنَ اللَّهِ	عَمَّا يُشْرِكُونَ 43	وَإِنْ	يَرَوْا كِسْفًا	اللَّهُ	سُبْحَنَ	اللَّهُ ط
अल्लाह के	पाक है	अल्लाह	उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं	और अगर	वो देखें	कोई टुकड़ा
مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ 44	فَذَرُهُمْ	حَتَّى	مِّنَ السَّمَاءِ	سَاقِطًا	يَقُولُوا	سَحَابٌ	مَّرْكُومٌ 44
आसमान से	गिरने वाला	वो कहेंगे	बादल हैं	तह-ब-तह	पस छोड़ो उन्हें	यहां तक कि	यहां तक कि
يُلْقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ 45 لا	يَوْمَ	لَا يُغْنِي	يُلْقُوا	يَوْمَهُمُ	الَّذِي	فِيهِ	يُصْعَقُونَ 45 لا
वो जा मिलें	अपने (उस) दिन से	वो जो	उसमें	वो बेहोश किए जाएंगे	जिस दिन	ना काम आएगी	ना काम आएगी
عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ 46 ط	وَأَنَّ	لِلَّذِينَ	عَنْهُمْ	كَيْدُهُمْ	شَيْئًا	وَلَا	هُمْ يُنْصَرُونَ 46 ط
उन्हें	चाल उनकी	कुछ भी	और ना	वो	वो मदद दिए जाएंगे	और बेशक	उनके लिए जिन्होंने
ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ 47	ظَلَمُوا	عَذَابًا	دُونَ	ذَلِكَ	وَلَكِنَّ	أَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُونَ 47
जुल्म किया	एक अज़ाब है	इलावा	उसके	और लेकिन	अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	नहीं वो इल्म रखते
وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ	وَاصْبِرْ	لِحُكْمِ	رَبِّكَ	فَإِنَّكَ	بِأَعْيُنِنَا	وَسَبِّحْ	بِحَمْدِ
और सब्र कीजिए	हुक़म के लिए	अपने रब के	पस बेशक आप	हमारी निगाहों के सामने हैं	और तस्बीह कीजिए	साथ तारीफ़ के	साथ तारीफ़ के
رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ 48 لا	وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ	وَإِدْبَارَ النُّجُومِ 49 ع	رَبِّكَ	حِينَ	تَقُومُ 48 لا	وَمِنَ اللَّيْلِ	فَسَبِّحْهُ
अपने रब की	जिस वक़्त	आप खड़े होते हैं	और रात को	पस तस्बीह कीजिए उसकी	और पलटने के बाद	सितारों के	सितारों के

وَالنَّجْمُ	إِذَا	هَوَىٰ ①	مَا	ضَلَّ	صَاحِبُكُمْ	وَمَا	غَوَى ②	وَمَا
कसम है सितारे की	जब	वो गिरे	नहीं	राह भूला	साथी तुम्हारा	और ना ही	वो बहका	और नहीं
يَنْطِقُ	عَنِ الْهَوَىٰ ③	إِنْ	هُوَ	إِلَّا	وَحْيٌ	يُوحَىٰ ④	عَلَيْهِ	
वो बोलता	ख्वाहिशे नफ़्स से	नहीं	वो	मगर	एक वही	जो वही की जाती है	सिखाया उसे	
شَدِيدٌ	الْقُوَى ⑤	ذُو مِرَّةٍ ⑥	فَاسْتَوَى ⑥	وَهُوَ	بِالْأَفْقِ	الْأَعْلَى ⑦		
बहुत ज़बरदस्त	कुव्वत वाले ने	जो बड़ा ज़ोरआवर है	फिर वो सीधा खड़ा हो गया	और वो	किनारे पर था	बुलंद		
ثُمَّ	دَنَا	فَتَدَلَّى ⑧	فَكَانَ	قَابَ	قَوْسَيْنِ	أَوْ	أَدْنَى ⑨	
फिर	वो करीब हुआ	पस वो उतर आया	तो वो हो गया	बक़दर	दो कमानों के	या	उससे ज़्यादा करीब	
فَأَوْحَىٰ	إِلَىٰ عَبْدِهِ	مَا	أَوْحَىٰ ⑩	مَا	كَذَبَ	الْفُؤَادُ	مَا	
तो उसने वही पहुंचाई	उस (अल्लाह) के बंदे की तरफ़	जो	उसने वही पहुंचाई	नहीं	झूठ बोला	दिल ने	जो कुछ	
رَأَى ⑪	اَفْتَبَرُونَهُ	عَلَىٰ مَا	يَرَى ⑫	وَلَقَدْ	رَأَاهُ	نَزَلَةً		
उसने देखा	क्या फिर तुम झगड़ते हो उससे	ऊपर उसके जो	वो देखता है	और अलबत्ता तहकीक़	उसने देखा उसे	एक बार उतरते		
أُخْرَى ⑬	عِنْدَ	سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ⑭	عِنْدَهَا	جَنَّةُ الْبَاوَى ⑮	إِذْ			
और भी	पास	सिंदरतुल मुंतहा के	उसी के पास है	जन्नतुल मावा	जब			
يَغْشَى	السِّدْرَةَ	مَا	يَغْشَى ⑯	مَا	زَاغَ	الْبَصَرُ	وَمَا	طَغَى ⑰
छा रहा था	बेरी के दरख़्त पर	जो कुछ	छा रहा था	ना	कजी की	निगाह ने	और ना	वो हद से बढ़ी
لَقَدْ	رَأَى	مِنْ آيَاتِ	رَبِّهِ	الْكُبْرَى ⑱	أَفْرَأَيْتُمْ	اللَّهُ		
अलबत्ता तहकीक़	उसने देखीं	निशानियां	अपने रब की	बड़ी-बड़ी	क्या फिर देखा तुमने	लात		
وَالْعُرَى ⑲	وَمَنْوَةٌ	الثَّالِثَةِ	الْأُخْرَى ⑳	الْكُمُ	الذِّكْرُ	وَلَهُ		
और उज़्ज़ा को	और मनात	तीसरी	एक और को	क्या तुम्हारे लिए हैं	लड़के	और उसके लिए हैं		

الْأُنثَى ②١	تِلْكَ	إِذَا	قِسْبَةٌ	ضِيْرَى ②٢	إِنْ	هِيَ	إِلَّا	أَسْبَاءُ
लड़कियां	ये	तब	एक तक्सीम है	नाइंसाफ़ी की	नहीं	वो	मगर	कुछ नाम हैं
سَبَّيْتُهُمْ	أَنْتُمْ	وَأَبَاؤُكُمْ	مَا	أَنْزَلَ	اللَّهُ	بِهَا		
नाम रखे तुमने उनके	तुमने	और तुम्हारे आबा ओ अजदाद ने	नहीं	नाज़िल की	अल्लाह ने	उत्की		
مِنْ سُلْطٰنٍ ٢	إِنْ	يَتَّبِعُونَ	إِلَّا	الظَّنَّ	وَمَا	تَهْوٰى	الْأَنْفُسُ ٣	
कोई दलील	नहीं	वो पैरवी करते	मगर	गुमान की	और उसकी जो	ख्वाहिश करते हैं	नफ़्स	
وَلَقَدْ	جَاءَهُمْ	مِّن رَّبِّهِمْ	الْهُدٰى ٢٣	أَمْ	لِلْإِنْسَانِ	مَا		
और अलबत्ता तहक्कीक	आई उनके पास	उनके रब की तरफ़ से	हिदायत	क्या है	इंसान के लिए	जो		
تَبٰى ٢٤	فَدِلٰهٖ	الْآخِرَةُ	وَالْأُولٰٓءِ ٢٥	وَكَمْ	مِّن مَّلَكٍ	فِي السَّمٰوٰتِ		
वो तमन्ना करे	तो अल्लाह ही के लिए है	आखिरत	और पहली (दुनिया)	और कितने ही	फ़रिश्ते हैं	आसमानों में		
لَا تُغْنِیْ	شَفَاعَتُهُمْ	شَيْعًا	إِلَّا	مِّنْ بَعْدِ	أَنْ	يَّأْذَنَ	اللَّهُ	
ना काम आएगी	सिफ़ारिश उनकी	कुछ भी	मगर	इसके बाद	कि	इजाज़त दे	अल्लाह	
لِسَنٍ	يَّشَاءُ	وَيَرْضٰى ٢٦	إِنَّ	الَّذِينَ	لَا يُؤْمِنُونَ	بِالْآخِرَةِ		
जिसके लिए	वो चाहे	और वो राज़ी हो जाए	बेशक	वो लोग जो	नहीं वो ईमान लाते	आखिरत पर		
لَيْسُوْنَ	الْمَلٰٓئِكَةِ	تَسْبِيَةً	الْأُنثٰى ٢٧	وَمَا	لَهُمْ	بِہٖ		
अलबत्ता वो नाम रखते हैं	फ़रिश्तों के	नाम	औरतों जैसे	और नहीं	उन्हें	इसका		
مِّنْ عِلْمٍ ٢	إِنْ	يَتَّبِعُونَ	إِلَّا	الظَّنَّ ٣	وَإِنَّ	الظَّنَّ	لَا يُغْنِیْ	
कोई इल्म	नहीं	वो पैरवी करते	मगर	गुमान की	और बेशक	गुमान	नहीं वो काम आता	
مِّنَ الْحَقِّ	شَيْعًا ٢٨	فَاعْرِضْ	عَنْ	مِّنْ	تَوَلٰى ٤	عَنْ ذِكْرِنَا		
हक़ के (मुकाबले पर)	कुछ भी	तो ऐराज़ कीजिए	उससे	जो	मुंह मोड़े	हमारे ज़िक्र से		

وَلَمْ يَرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ²⁹ ذَلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ^ط	और ना	वो चाहे	मगर	ज़िंदगी	दुनिया की	ये ही	इंतिहा है उनकी	इल्म में
إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ^ل وَهُوَ	बेशक	रब आपका	वो	ज़्यादा जानता है	उसे जो	भटक गया	उसके रास्ते से	और वो
أَعْلَمُ بِمَنْ اهْتَدَى ³⁰ وَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا	ज़्यादा जानता है	उसे जो	हिदायत पा गया	और अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	
فِي الْأَرْضِ ^ل لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا ^ب بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ	ज़मीन में है	ताकि वो बदला दे	उनको जिन्होंने	बुरा किया	बवजह इसके जो	उन्होंने अमल किए	और वो बदला दे	
الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ³¹ الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ	उनको जिन्होंने	अच्छा किया	साथ भलाई के	वो लोग जो	इज्तिनाब करते हैं	कबीरा	गुनाहों से	
وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ^ط إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ^ط	और बेहयाई से	सिवाए	छोटे गुनाहों के	बेशक	रब आपका	वसीअ	मशफ़िरत वाला है	
هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ	वो	ज़्यादा जानता है	तुम्हें	जब	उसने पैदा किया तुम्हें	ज़मीन में	और जब	तुम
أَجْنَةً فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ^ج فَلَا تَزْكُوا ^ل أَنْفُسَكُمْ ^ط هُوَ	जनीन थे	पेटों में	अपनी माओं के	पस ना	तुम पाक ठहराओ	अपने नफ़्सों को	वो	
أَعْلَمُ بِمَنْ اتَّقَى ³² أَفْرَعَيْتَ ^ع الَّذِي تَوَلَّى ³³ وَأَعْطَى قَلِيلًا	ज़्यादा जानता है	उसे जिसने	तक़वा इख़्तियार किया	क्या भला देखा आप ने	उसे जो	मुंह मोड़ गया	और उसने दिया	थोड़ा सा
وَأَكْدَى ³⁴ أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَى ³⁵ أَمْ لَمْ	और उसने रोक लिया	क्या उसके पास	इल्म है	ग़ैब का	तो वो	वो देख रहा है	या	नहीं

يُنَبِّأُ	بِمَا	فِي صُحُفٍ	مُوسَى 36	وَإِبْرَاهِيمَ	الَّذِي	وَفِي 37	أَلَّا
वो खबर दिया गया	उसकी जो	सहीफों में है	मूसा के	और इब्राहीम के	जिसने	वफ़ा की	कि ना
تَزُرُ	وَازِرَةً	وَزَرَ	أُخْرَى 38	وَأَنْ	لَّيْسَ	لِلْإِنْسَانِ	إِلَّا
बोझ उठाएगी	कोई बोझ उठाने वाली	बोझ	किसी दूसरी का	और ये कि	नहीं है	इंसान के लिए	मगर
مَا	سَعَى 39	وَأَنَّ	سَعِيَهُ	سَوْفَ	يُرَى 40	ثُمَّ	يُجْزَاهُ
जो	उसने कोशिश की	और ये कि	कोशिश उसकी	अनकरीब	वो देखी जाएगी	फिर	बदला दिया जाएगा उसे
الْجَزَاءَ	الْأَوْفَى 41	وَأَنَّ	إِلَى رَبِّكَ	الْمُنْتَهَى 42	وَأَنَّهُ	هُوَ	
बदला	पूरा-पूरा	और बेशक	आपके रब की तरफ़ ही	इंतिहा है	और बेशक वो	वो ही है	
أَضْحَكَ	وَأَبْكَى 43	وَأَنَّهُ	هُوَ	أَمَاتَ	وَأَحْيَا 44	وَأَنَّهُ	
जिसने हंसाया	और उसने रुलाया	और बेशक वो	वो ही है	जिसने मौत दी	और उसने ज़िंदा किया	और बेशक वो ही है	
خَلَقَ	الزَّوْجَيْنِ	الذَّكَرَ	وَالْأُنثَى 45	مِنْ نُّطْفَةٍ	إِذَا	تُسْنَى 46	
जिसने पैदा किया	जोड़ों को	नर	और मादा को	नुत्के से	जब	वो टपकाया जाता है	
وَأَنَّ	عَلَيْهِ	النَّشْأَةَ	الْأُخْرَى 47	وَأَنَّهُ	هُوَ	أَغْنَى	وَأَقْنَى 48
और बेशक	उसी के ज़िम्मा है	पैदाइश	दूसरी मर्तबा	और बेशक वो	वो ही है	जिसने ग़नी किया	और उसने मालदार बनाया
وَأَنَّهُ	هُوَ	رَبُّ	الشَّعْرَى 49	وَأَنَّهُ	أَهْلَكَ	عَادًا	الْأُولَى 50
और बेशक वो	वो ही है	रब	शिअरा (सितारे) का	और बेशक वो ही है	जिसने हलाक किया	आदे	ऊला को
وَتَسُودًا	فَمَا	أَبْقَى 51	وَقَوْمَ	نُوحَ	مِنْ قَبْلُ ط	إِنَّهُمْ	كَانُوا
और समूद को	पस ना	उसने बाक़ी छोड़ा	और क़ौमे	नूह को	उससे क़ब्ल	बेशक वो	थे वो
هُمْ	أَظْلَمَ	وَاطْغَى 52	وَالْمُوتِفَكَةَ	أَهْوَى 53	فَغَشَّاهَا	مَا	
वो	बहुत ज़ालिम	और ज़्यादा सरकश	और उलट जाने वाली बस्ती को	उसने नीचे दे मारा	तो ढांप लिया उन्हें	जिसने	

غَشَى 54 ج	فَبَايَ الْآءِ	رَبِّكَ	تَتَبَارَى 55	هَذَا	نَذِيرٌ	مِّنَ النَّذْرِ
ढांपा	पस कौन सी	नेअमतों पर	अपने रब की	तुम शक करते हो	ये	एक डराने वाला है

الأُولَى 56	أَزِفَتْ	الْأَرْفَةُ 57 ج	لَيْسَ	لَهَا	مِنْ دُونِ	اللَّهِ
पहले	नज़दीक आ गई	नज़दीक आने वाली	नहीं	उसके लिए	सिवाए	अल्लाह के

كَاشِفَةٌ 58 ط	أَقْبِنُ	هَذَا	الْحَدِيثِ	تَعْجِبُونَ 59 لا	وَتَضْحَكُونَ
कोई हटाने वाला	क्या भला	इस	बात से	तुम ताअज्जुब करते हो	और तुम हंसते हो

وَلَا تَبْكُونَ 60 لا	وَأَنْتُمْ	سِيدُونَ 61	فَاسْجُدُوا	لِلَّهِ	وَاعْبُدُوا 62 السجدة
और नहीं तुम रोते	और तुम	शाफ़िल हो	पस सज्दा करो	अल्लाह के लिए	और इबादत करो

آيَاتُهَا: 55	سُورَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ 54	رُكُوعَاتُهَا: 3
---------------	---------------------------------	------------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ	وَانْشَقَّ الْقَمَرُ 1	وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرَضُوا
क़यामत	और शक हो गया	चांद

وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَبِرٌّ 2	وَكَذَّبُوا	وَاتَّبَعُوا	أَهْوَاءَهُمْ	وَكُلُّ
और वो कहते हैं	एक जादू है	जारी	और उन्होंने झुठलाया	और उन्होंने पैरवी की

أَمْرٍ مُّسْتَقَرٌّ 3	وَلَقَدْ جَاءَهُمْ	مِّنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ 4
काम का	वक़्त मुक़रर है	और अलबत्ता तहकीक़

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ	فَبَا	تُغْنِ	النُّذُرُ 5 لا	فَقَوْلٌ	عَنْهُمْ	يَوْمَ
हिक्मत है	कामिल	तो ना	काम आए	डरावे	तो मुंह फेर लीजिए	उनसे

يَدْعُ	الدَّاعِ	إِلَى شَيْءٍ	تُكْرِ 6 لا	خُشْعًا	أَبْصَارُهُمْ	يَخْرُجُونَ
पुकारेगा	पुकारने वाला	तरफ़ एक चीज़	नागवार के	झुकी हुई होंगी	निगाहें उनकी	वो निकलेंगे

مِنَ الْأَجْدَاثِ	كَانَهُمْ	جَرَادٌ	مُنْتَشِرٌ ⑦	مُهْطِعِينَ	إِلَى الدَّاعِ ط
कब्रों से	गोया कि वो	टिड्डियां हैं	फैली हुई	दौड़ते होंगे	तरफ़ पुकारने वाले के
يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ⑧	كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ				
कहेंगे	काफिर	ये	दिन है	बड़ा सख़्त	झुठलाया
इनसे पहले	कौमे	तूह ने			
فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ ⑨	وَازْدُجِرَ ⑨	فَدَعَا رَبَّهُ			
तो उन्होंने झुठलाया	हमारे बंदे को	और उन्होंने कहा	मजनून है	और वो झिड़क दिया गया	तो उसने पुकारा
अपने रब को					
أَنِّي مَغْلُوبٌ فَأَنْتَصِرُ ⑩	فَفَتَحْنَا	أَبْوَابَ السَّمَاءِ	بِمَاءٍ		
बेशक मैं	मग़लूब हूँ	पस तू इन्तिक्राम ले	तो खोल दिए हमने	दरवाज़े	आसमान के
साथ एक पानी					
مُنْهَرٍ ⑪	وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا	فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَى أَمْرٍ قَدْ			
ख़ूब बरसने वाले के	और फाड़ दिया हमने	ज़मीन से	चश्मों को	पस मिल गया	पानी
एक काम पर	तहकीक				
قُدْرَ ⑫	وَحَصَلْنَاهُ	عَلَى ذَاتِ الْوَاحِ ⑬	وَدَسِرَ ⑬	تَجَرَّى	بَاعَيْنَاهُ
जो मुक़द्दर हो चुका था	और सवार किया हमने उसे	ऊपर तख़्तों वाली	और मेखों वाली के	जो चल रही थी	हमारी निगाहों के सामने
جَزَاءً لِّبَنٍ كَانَ كُفِرَ ⑭	وَلَقَدْ	تَرَكْنَاهَا	أَيَّةٌ	فَهَلْ	
बदला था	उसका जो	था	इंकार किया गया	और अलबत्ता तहकीक	छोड़ दिया हमने उसे
एक निशानी (बनाकर)	तो क्या है				
مِنْ مُدَكِّرٍ ⑮	فَكَيْفَ	كَانَ	عَذَابِي	وَنَذِرٍ ⑯	وَلَقَدْ
कोई नसीहत पकड़ने वाला	तो कैसा	था	अज़ाब मेरा	और डराना मेरा	और अलबत्ता तहकीक
आसान कर दिया हमने					
الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ⑰	كَذَّبَتْ عَادٌ	فَكَيْفَ	كَانَ		
कुरआन को	नसीहत के लिए	तो क्या है	कोई नसीहत पकड़ने वाला	झुठलाया	आद ने
तो कैसा	था				
عَذَابِي وَنَذِرٍ ⑱	إِنَّا	أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ	رِيحًا	صَرْصَرًا	فِي يَوْمٍ
अज़ाब मेरा	और डराना मेरा	बेशक हम	भेजा हमने	उन पर	एक दिन में
एक हवा					

نَحْسٍ مُّسْتَبِيرٍ 19	تَنْزِعُ	النَّاسَ ١	كَانَهُمْ	أَعْجَازُ	نَخْلٍ
मुसलसल नहसत वाले	उखाड़ कर फेंक रही थी	लोगों को	गोया कि वो	तने थे	खजूर के
مُنْقَعِرٍ 20	فَكَيْفَ كَانَ	عَذَابِي وَنُذِرٍ 21	وَلَقَدْ	يَسْرُنَا	الْقُرْآنَ
जड़ से उखड़े हुए	तो कैसा था	अज़ाब मेरा और डराना मेरा	और अलबत्ता तहकीक़	आसान कर दिया हमने	कुरआन को
لِلذِّكْرِ	فَهَلْ مِنْ مُّدْكِرٍ 22	كَذَّبَتْ	ثَمُودُ	بِالنُّذْرِ 23	فَقَالُوا
नसीहत के लिए	तो क्या है	कोई नसीहत पकड़ने वाला	झुठलाया	समूद ने	डराने वालों को
أَبَشْرًا	مِمَّنَّا	وَاحِدًا	تَتَّبِعُهُ ٢	إِنَّا	إِذَا
क्या एक आदमी	हम में से	अकेला	हम पैरवी करें उसकी	बेशक हम	तब
ءَ الْفَى	الذِّكْرِ عَلَيْهِ	مِنْ بَيْنِنَا	بَلْ	هُوَ	كَذَّابٌ
क्या डाला गया	इस पर	हमारे दर्मियान से	बल्कि	वो है	सख़्त झूठा
سَيَعْلَبُونَ	غَدًا	مَنْ	الْكَذَّابُ	الْأَشْرُ 26	إِنَّا
अनक़रीब वो जान लेंगे	कल	कौन है	सख़्त झूठा	बहुत इतराने वाला	बेशक हम
فِتْنَةً لَهُمْ	فَارْتَقِبْهُمْ	وَاصْطَبِرْ 27	وَنَبِّئْهُمْ	أَنَّ	الْمَاءَ
बतौर आजमाइश	उनके लिए	पस इंतज़ार करो उनका	और सब्र करो	और आगाह कर दो उन्हें	बेशक
بَيْنَهُمْ ٣	كُلُّ	شَرِبٍ	مُحْتَضِرٌ 28	فَنَادُوا	صَاحِبَهُمْ
दर्मियान उनके	हर एक के	पानी की बारी	हाज़िर की गई है	तो उन्होंने पुकारा	अपने साथी को
فَعَقَرَ 29	فَكَيْفَ كَانَ	عَذَابِي وَنُذِرٍ 30	إِنَّا	أَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمْ
फिर उसने कूचें काट डालीं	फिर कैसा था	अज़ाब मेरा और डराना मेरा	बेशक हम	भेजी हमने	उन पर
صِيْحَةً	وَاحِدَةً	فَكَانُوا	كَهَشِيمٍ	الْمُحْتَظِرِ 31	وَلَقَدْ
चिंघाड़	एक ही	तो हो गए वो	मानिंद रौंदी हुई बाड़ के	बाड़ लगाने वाले की	और अलबत्ता तहकीक़

الْقُرْآنَ	لِلذِّكْرِ	فَهَلْ	مِنْ مُدَكِّرٍ 32	كَذَّبَتْ	قَوْمُ	لُوطٍ
कुरआन को	नसीहत के लिए	तो क्या है	कोई नसीहत पकड़ने वाला	झुठलाया	कौमे	लूत ने
بِالنُّذْرِ 33	إِنَّا	أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ	حَاصِبًا	إِلَّا	أَلْ لُوطٍ ط	نَجَّيْنَهُمْ
डराने वालों को	बेशक हम	भेजी हमने	उन पर	पत्थरों की आंधी	आले लूत के	निजात दी हमने उन्हें
بِسَحْرِ 34	نِعْمَةً	مِّنْ عِنْدِنَا ط	كَذَلِكَ	نَجْزِي	مَنْ	شَكَرَ 35
सहर के वक्त	बतौर इनआम	हमारे पास से	इसी तरह	हम बदला देते हैं	उसे जो	शुक्र अदा करे
وَلَقَدْ	أَنْذَرَهُمْ	بَطْشَتْنَا	فَتَبَارَوْا	بِالنُّذْرِ 36	وَلَقَدْ	
और अलबत्ता तहकीक	उसने डराया उन्हें	हमारी पकड़ से	तो उन्होंने शक किया	डरावों पर	और अलबत्ता तहकीक	
رَأَوْدُوهُ	عَنْ ضَيْفِهِ	فَطَسْنَا	أَعَيْنَهُمْ	فَذُوقُوا	عَذَابِي	
उन्होंने फुसलाना चाहा उसे	उसके मेहमानों के बारे में	तो मिटा दीं हमने	आंखें उनकी	तो चखो	अज़ाब मेरा	
وَنُذِرُ 37	وَلَقَدْ	صَبَّحَهُمْ	بُكْرَةً	عَذَابٌ	مُّسْتَقَرٌّ 38	فَذُوقُوا
और डराना मेरा	और अलबत्ता तहकीक	सुबह की उन पर	सुबह सवेरे	एक अज़ाब	मुसलसल ने	तो चखो
عَذَابِي	وَنُذِرُ 39	وَلَقَدْ	يَسِّرْنَا	الْقُرْآنَ	لِلذِّكْرِ	فَهَلْ
अज़ाब मेरा	और डराना मेरा	और अलबत्ता तहकीक	आसान कर दिया हमने	कुरआन को	नसीहत के लिए	तो क्या है
مِنْ مُدَكِّرٍ 40	وَلَقَدْ	جَاءَ	أَلْ فِرْعَوْنَ	النُّذْرِ 41	كَذَّبُوا	بِآيَاتِنَا
कोई नसीहत पकड़ने वाला	और अलबत्ता तहकीक	आए	आले फिरऔन के पास	डराने वाले	उन्होंने झुठलाया	हमारी आयात को
كُلِّهَا	فَاخَذْنَاهُمْ	أَخَذَ	عَزِيزٍ	مُّقْتَدِرٍ 42	أَكْفَارُكُمْ	خَيْرٌ
सब की	तो पकड़ लिया हमने उन्हें	पकड़ना	बहुत ज़बरदस्त	इक़्तदार वाले का	क्या कुफ़्फ़ार तुम्हारे	बेहतर हैं
مِّنْ أُولَئِكَمُ	أَمْ	لَكُمْ	بِرَاءَةٌ	فِي الزُّبُرِ 43	أَمْ	يَقُولُونَ
उन लोगों से	या	तुम्हारे लिए	कोई छुटकारा पाना है	(पहली) किताबों में	या	वो कहते हैं
						हम हैं

جَمِيعٌ	مُنْتَصِرٌ ④④	سِيْهَزَمُ	الْجَمْعُ	وَيُوَلُّونَ	الدُّبْرُ ④⑤	بَلِ
एक जमाअत	बदला लेने वाले	अनकरीब शिकस्त खा जाएगा	जत्था	और वो फेर लेंगे	पुश्तें	बल्कि

السَّاعَةُ	مَوْعِدُهُمْ	وَالسَّاعَةُ	أَدْهَى	وَأَمْرٌ ④⑥	إِنَّ	الْبُجْرَمِينَ
क्रयामत	उनके वादे का वक़्त है	और क्रयामत	बहुत सख़्त है	और बहुत कड़वी	बेशक	मुजरिम लोग

فِي ضَلَالٍ	وَسُعِيرٌ ④⑦	يَوْمَ	يُسْحَبُونَ	فِي النَّارِ	عَلَى وُجُوهِهِمْ ط
गुमराही में हैं	और जुनून में	जिस दिन	वो घसीटे जाएंगे	आग में	अपने चेहरों के बल

ذُوقُوا	مَسَّ	سَقَرَ ④⑧	إِنَّا	كُلَّ	شَيْءٍ	خَلَقْنَاهُ	بِقَدْرِ ④⑨
चखो	छूना	दोज़ख़ का	बेशक हमने	हर	चीज़ को	पैदा किया हमने उसे	साथ एक अंदाज़े के

وَمَا	أَمْرُنَا	إِلَّا	وَاحِدَةٌ	كَلِمَةٍ	بِالْبَصَرِ ⑤⑦	وَلَقَدْ	أَهْلَكْنَا
और नहीं	हुक़म हमारा	मगर	एक ही बार	मानिंद झपकने के	निगाह को	और अलबत्ता तहकीक़	हलाक किया हमने

أَشْيَاعَكُمْ	فَهَلْ	مِنْ مُدِّكَرٍ ⑤①	وَكُلُّ	شَيْءٍ	فَعَلُوهُ	فِي الزُّبُرِ ⑤②
तुम्हारे गिरोहों को	तो क्या है	कोई नसीहत पकड़ने वाला	और हर	चीज़	उन्होंने किया जिसे	सहीफ़ों में है

وَكُلُّ	صَغِيرٍ	وَكَبِيرٍ	مُسْتَطَرٌ ⑤③	إِنَّ	الْبُتْقِينَ	فِي جَنَّتٍ
और हर	छोटा	और बड़ा	लिखा हुआ है	बेशक	मुत्तक़ी लोग	बागात में होंगे

وَنَهَرٍ ⑤④	فِي مَقْعَدٍ	صِدْقٍ	عِنْدَ مَلِيكَ	مُقْتَدِرٍ ⑤⑤
और नहरों में	जगह में	सच्चाई की	बादशाह के पास	जो इक़्तदार वाला है

آيَاتُهَا: 78	سُورَةُ الرَّحْمَنِ مَدَنِيَّةٌ 97	رُكُوعَاتُهَا: 3
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ		

الرَّحْمَنُ ①	عَلَّمَ	الْقُرْآنَ ②	خَلَقَ	الْإِنْسَانَ ③	عَلَّمَهُ	الْبَيَانَ ④
रहमान	उसने तालीम दी	कुरआन की	उसने पैदा किया	इंसान को	सिखाया उसे	बोलना

الشَّمْسُ	وَالْقَمَرُ	بِحُسْبَانٍ ٥	وَالنَّجْمُ	وَالشَّجَرُ	يَسْجُدَانِ ٦
सूरज	और चांद	एक हिसाब के साथ हैं	और सितारे/बेलें	और दरख्त	वो दोनों सज्दा कर रहे हैं
وَالسَّهَاءُ	رَفَعَهَا	وَوَضَعَ	الْبَيْزَانَ ٧	أَلَّا	تَطْغَوْا فِي الْبَيْزَانِ ٨
और आसमान	उसने बुलंद किया उसे	और उसने रख दिया	मीज़ान	कि ना	तुम ज़्यादती करो
وَأَقِيمُوا	الْوَزْنَ	بِالْقِسْطِ	وَلَا	تُخْسِرُوا	الْبَيْزَانَ ٩
और कायम करो	वज़न को	साथ इंसफ़ के	और ना	तुम कमी करो	तोल में
وَضَعَهَا	لِلْأَنَامِ ١٠	فِيهَا	فَاكِهَةً ١١	وَالنَّخْلُ	ذَاتُ الْأَكْمَامِ ١١
उसने रख दिया उसे	मखलूक़ात के लिए	उसमें	फल हैं	और खजूर के दरख्त हैं	खोशों वाले
وَالْحَبُّ	ذُو الْعَصْفِ	وَالرَّيْحَانُ ١٢	فَبَائِي	الْأَءِ	رَبِّكُمْ
और गल्ले हैं	भुस वाले	और खुशबूदार फूल हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की
تُكَذِّبِينَ ١٣	خَلَقَ	الْإِنْسَانَ	مِنْ صَلْصَالٍ	كَالْفَخَّارِ ١٤	وَخَلَقَ
तुम दोनों झुठलाओगे	उसने पैदा किया	इंसान को	बजने वाली मिट्टी से	ठीकरी की तरह की	और उसने पैदा किया
الْجَانَّ	مِنْ مَّارِجٍ	مِّنْ نَّارٍ ١٥	فَبَائِي	الْأَءِ	رَبِّكُمْ
जिन्न को	शोले से	आग के	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की
رَبُّ	الْمَشْرِقَيْنِ	وَرَبُّ	الْمَغْرِبَيْنِ ١٧	فَبَائِي	الْأَءِ
रब है	दो मशरिकों का	और रब है	दो मगरिबों का	तो कौन सी	नेअमतों को
تُكَذِّبِينَ ١٨	مَرَجٍ	الْبَحْرَيْنِ	يَلْتَقَيْنِ ١٩	بَيْنَهُمَا	بَرْزَخٍ
तुम दोनों झुठलाओगे	उसने छोड़ दिया	दो समुन्दरों को	वो दोनों बाहम मिलते हैं	उन दोनों के दर्मियान	एक पर्दा है
لَا يَبْغِينَ ٢٠	فَبَائِي	الْأَءِ	رَبِّكُمْ	تُكَذِّبِينَ ٢١	يَخْرُجُ مِنْهَا
नहीं वो दोनों तजावुज़ करते	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	निकलते हैं
इन दोनों से					

اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ 22	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ 23	وَلَهُ
और मूंगे	तो कौन सी	नेअमतों को
और मूंगे	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे
और उसी के लिए हैं		
الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ 24	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا	
जहाज़	ऊँचे उठे हुए	समुन्दर में
ऊँचे पहाड़ों की तरह	तो कौन सी	नेअमतों को
अपने रब की		
تُكَذِّبِينَ 25	كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ 26	وَيَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ
तुम दोनों झुठलाओगे	जो	उस पर हैं
सब	फ़ना होने वाले हैं	और बाक़ी रहेगा
चेहरा	आपके रब का	
ذُو الْجَلَلِ وَالْإِكْرَامِ 27	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ 28	يَسْأَلُهُ
और इज़्ज़त वाला	तो कौन सी	नेअमतों को
बुजुर्गी वाला	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे
मांगता है उसी से		
مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ 29	فَبِأَيِّ	
जो भी	आसमानों में	और ज़मीन में है
हर	दिन	वो
एक नई शान में है	तो कौन सी	
الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ 30	سَنَفَرُغْ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَيْنِ 31	
नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे
तुम दोनों झुठलाओगे	अनक़रीब हम फ़ारिग़ हो जाएँगे	तुम्हारे लिए
ऐ	दो बोझों (जिन्न व इन्स)	
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ 32	يَعُشِّرُ الْجَنِّ وَالْإِنْسَ إِنْ	
तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की
तुम दोनों झुठलाओगे	ऐ गिरोह	जिन्नों
और इंसानों के	अगर	
اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا		
तुम इस्तिताअत रखते हो	कि	तुम निकल जाओ
तुम निकल जाओ	किनारों से	आसमानों
और ज़मीन के	तो निकल जाओ	
لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَنِ 33	فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ 34	
मगर	साथ एक कुव्वत के	तो कौन सी
नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे
يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوَاظُ مِّنْ نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرُونَ 35		
छोड़ दिया जाएगा	तुम दोनों पर	एक शोला
आग का	और धुआं	तो ना
तुम दोनों मुक़ाबला कर सकोगे		

فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمْ	تُكَذِّبِينَ 36	فَإِذَا	انْشَقَّتِ	السَّمَاءُ	فَكَانَتْ
तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	फिर जब	फट जाएगा	आसमान	तो वो हो जाएगा
وَرُدَّةٌ	كَالِدِّهَانِ 37	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمْ	تُكَذِّبِينَ 38	فِيَوْمَئِذٍ	
सुख	मानिद सुख चमड़े के	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	तो उस दिन	
لَا يُسْأَلُ	عَنْ ذُنُوبِهِ	إِنْسٌ	وَلَا	جَانٌّ 39	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمْ
ना पूछा जाएगा	अपने गुनाह के बारे में	कोई इंसान	और ना	कोई जिन	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की
تُكَذِّبِينَ 40	يُعْرَفُ	الْجُرْمُونَ	بِسِيئِهِمْ	فِيُؤْخَذُ			
तुम दोनों झुठलाओगे	पहचाने जाएंगे	मुजरिम	अपने चेहरों की अलामत से	तो वो पकड़े जाएंगे			
بِالنَّوَصِي	وَالْأَقْدَامِ 41	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمْ	تُكَذِّبِينَ 42	هَذِهِ	
पेशानी के बालों से	और कदमों से	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	ये है	
جَهَنَّمَ	الَّتِي	يُكَذِّبُ	بِهَا	الْجُرْمُونَ 43	يُطَوَّفُونَ	بَيْنَهَا	
जहन्नम	वो जो	झुठलाते थे	उसे	मुजरिम	वो गर्दिश करेंगे	दर्मियान उसके	
وَبَيْنَ	حَمِيمٍ	أَنِ 44	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمْ	تُكَذِّبِينَ 45	
और दर्मियान	सख्त गर्म पानी	खौलते हुए के	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	
وَلَسَنَ	خَافَ	مَقَامَ	رَبِّهِ	جَنَّتِينَ 46	فَبِأَيِّ	الْآءِ	
और उसके लिए जो	डरे	खड़ा होने से	अपने रब के सामने	दो बाग हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	
رَبِّكُمْ	تُكَذِّبِينَ 47	ذَوَاتَا أَفْنَانٍ 48	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمْ		
अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	दोनों बहुत शाखों वाले हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की		
تُكَذِّبِينَ 49	فِيْهَآ	عَيْنِنِ	تَجْرِيْنِ 50	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمْ	
तुम दोनों झुठलाओगे	उन दोनों में	दो चश्मे हैं	वो दोनों बहते होंगे	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	

تُكَذِّبُنِ 51	فِيْهِمَا	مِنْ كُلِّ	فَاكِهَةٍ	زَوْجِنِ 52	فَبِأَيِّ	الْآءِ
तुम दोनों झुठलाओगे	उन दोनों में	हर	फल की	दो किसमें हैं	तो कौन सी	नेअमतों की
رَبِّكُمَا	تُكَذِّبُنِ 53	مُتَّكِئِينَ	عَلَى فُرْشٍ	بَطَائِنُهَا		
अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	तकिया लगाए हुए होंगे	अपने बिस्तरों पर	अस्तर जिनके		
مِنْ إِسْتَبْرَقٍ 54	وَجَنَا	الْجَنَّتَيْنِ	دَانِ 54	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمَا
मोटे रेशम के होंगे	और फल	दोनों बागों के	झुके हुए होंगे	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की
تُكَذِّبُنِ 55	فِيْهِنَّ	قَصِرْتُ	الطَّرْفُ 55	لَمْ	يُطِثْنَهُنَّ	إِنْسٌ
तुम दोनों झुठलाओगे	उनमें होंगी	झुकाने वालीयां	निगाहों को	नहीं	छुआ उन्हें	किसी इंसान ने
قَبْلَهُمْ 56	وَلَا	جَانُّ 56	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبُنِ 57
उनसे पहले	और ना	किसी जिन ने	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे
الْيَاقُوتُ 58	وَالْبَرْجَانِ 58	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبُنِ 59	هَلْ
याकूत	और मरजान	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	नहीं
جَزَاءُ 60	الْإِحْسَانِ	إِلَّا	الْإِحْسَانُ 60	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمَا
बदला	एहसान का	मगर	एहसान ही	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की
تُكَذِّبُنِ 61	وَمِنْ دُونِهَا	جَنَّتَيْنِ 62	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمَا	
तुम दोनों झुठलाओगे	और इन दोनों के इलावा	दो बाग हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	
تُكَذِّبُنِ 63	مُدْهَامَّتَيْنِ 64	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبُنِ 65	
तुम दोनों झुठलाओगे	दोनों गहरे सब्ज़ हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	
فِيْهَا 66	عَيْنَيْنِ	نَصَاخَتَيْنِ 66	فَبِأَيِّ	الْآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبُنِ 67
उन दोनों में	दो चश्मे हैं	दोनों जोश मारने वाले	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे

فِيْهَآ	فَاكِهَةٌ	وَنَخْلٌ	وَرُمَّانٌ 68	فَبَآئِ	آلَاءِ	رَبِّكُمْآ
उन दोनों में	फल हैं	और खजूर के दरख्त	और अनार हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की
تُكَذِّبُنِ 69	فِيْهِنَّ	خَيْرَاتٌ	حَسَانٌ 70	فَبَآئِ	آلَاءِ	رَبِّكُمْآ
तुम दोनों झुठलाओगे	उन में	नेक औरतें हैं	खूबसूरत	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की
تُكَذِّبُنِ 71	حُورٌ	مَّقْصُورَاتٌ	فِي الْخِيَامِ 72	فَبَآئِ	آلَاءِ	رَبِّكُمْآ
तुम दोनों झुठलाओगे	हूरें	ठहराई हुई	खेमों में	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की
تُكَذِّبُنِ 73	لَمْ	يَطْبِثْنَهُنَّ	إِنْسٌ	قَبْلَهُمْ	وَلَا	جَانٌّ 74
तुम दोनों झुठलाओगे	नहीं	छुआ उन्हें	किसी इंसान ने	उनसे पहले	और ना	किसी जिन ने
آلَاءِ	رَبِّكُمْآ	تُكَذِّبُنِ 75	مُتَكَيِّنٌ	عَلَى رَفْرَفٍ	خُضِرٍ	
नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	तकिया लगाए हुए होंगे	कालीनों पर	सब्ज़	
وَعَبَقَرِيٍّ	حَسَانٍ 76	فَبَآئِ	آلَاءِ	رَبِّكُمْآ	تُكَذِّبُنِ 77	
और नादिर	खूबसूरत	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	
تَبَرَّكَ	اسْمُ	رَبِّكَ	ذِي الْجَلَلِ	وَالْإِكْرَامِ 78		
बहुत बाबरकत है	नाम	आपके रब का	जो बुजुर्गी वाला है	और इज़्ज़त वाला है		

آيَاتُهَا: 96	سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ 46	رُكُوعَاتُهَا: 3
---------------	------------------------------------	------------------

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا	وَقَعَتْ	الْوَاقِعَةُ 1	لَيْسَ	لَوْقَعَتْهَا	كَاذِبَةٌ 2	خَافِضَةٌ
जब	वाक़ेअ हो जाएगी	वाक़ेअ होने वाली	नहीं है	उसका वाक़ेअ होना	कोई झूठ	पस्त करने वाली है
رَّافِعَةٌ 3	إِذَا	رُجَّتِ	الْأَرْضُ	رَجَاً 4	وَبُسَّتِ	الْجِبَالُ
बुलंद करने वाली	जब	हिलाई जाएगी	ज़मीन	सज़त हिलाया जाना	और रेज़ा-रेज़ा कर दिए जाएंगे	पहाड़

بَسًّا ٥	فَكَانَتْ	هَبَاءً	مُّنْبَثًّا ٦	وَ كُنْتُمْ	أَزْوَاجًا	ثَلَاثَةً ٧
रेज़ा-रेज़ा किए जाना	तो हो जाएंगे वो	गर्द-ओ-गुबार	मुंतशिर	और हो जाओगे तुम	जमाअतों में	तीन
فَأَصْحَبُ الْبَيْنَةِ ٨	مَا	أَصْحَبُ الْبَيْنَةِ ٨	وَأَصْحَبُ الْبَشْعَةِ ٩			
पस दाएँ हाथ वाले	क्या हैं	दाएँ हाथ वाले	और बाएँ हाथ वाले			
مَا	أَصْحَبُ الْبَشْعَةِ ٩	وَالسَّبِقُونَ	السَّبِقُونَ ١٠	أُولَئِكَ		
क्या हैं	बाएँ हाथ वाले	और आगे बढ़ने वाले	तो आगे बढ़ने वाले हैं	यही लोग हैं		
الْمُقَرَّبُونَ ١١	فِي جَنَّتِ	النَّعِيمِ ١٢	ثَلَاثَةً	مِّنَ الْأَوَّلِينَ ١٣	وَقَلِيلٌ	
जो मुकर्रब हैं	बाग़ात में	नेअमतों वाले	एक बड़ा गिरोह	पहलों में से	और बहुत थोड़े	
مِّنَ الْآخِرِينَ ١٤	عَلَى سُرُرٍ	مَّوْضُونَةٍ ١٥	مُتَّكِئِينَ	عَلَيْهَا		
पिछलों में से	तख्तों पर होंगे	सोने के तारों से बने हुए	तकिया लगाए हुए होंगे	उन पर		
مُتَقَبِّلِينَ ١٦	يُطَوُّونَ	عَلَيْهِمْ	وَلَدَانِ	مُخَلَّدُونَ ١٧	بِأَكْوَابٍ	
आमने-सामने	गर्दिश कर रहे होंगे	उन पर	लड़के	हमेशा रहने वाले	साथ प्यालों	
وَأَبَارِيقَ ١٨	وَكَايِسَ	مِّن مَّعِينٍ ١٩	لَّا يُصَدَّعُونَ	عَنْهَا	وَلَا	
और सुराहियों के	और सागर	बहती शराब के	ना वो सर दर्द में मब्तिला किए जाएंगे	उससे	और ना	
يُزْفُونَ ٢٠	وَفَاكِهَةٍ	مِّمَّا	يَتَخَيَّرُونَ ٢١	وَلَحْمٍ	طَيْرٍ	مِّمَّا
वो बहकेंगे	और फल	उसमें से जो	वो पसंद करेंगे	और गोश्त	परिंदों का	उसमें से जो
يَشْتَهُونَ ٢٢	وَحُورٌ	عَيْنٌ ٢٣	كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ	الْبَكْنُونِ ٢٤	جَزَاءٌ	
वो ख्वाहिश करेंगे	और गोरी औरतें	बड़ी आंखों वाली	जैसे	मोती	छुपे हुए	बदला है
بِهَا	كَانُوا	يَعْمَلُونَ ٢٥	لَّا يَسْعَوْنَ	فِيهَا	لَغَوًا	وَلَا
उसका जो	थे वो	वो अमल करते	ना वो सुनेंगे	उसमें	कोई लगव बात	और ना
					कोई गुनाह की बात	

إِلَّا	قِيلًا	سَلَامًا	سَلَامًا	سَلَامًا	وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ	مَا
मगर	कहना	सलाम	सलाम	सलाम	और दाएँ हाथ वाले	क्या हैं
أَصْحَابُ الْيَمِينِ	فِي سِدْرٍ	مَخْضُودٍ	وَ طَلْحٍ	مَنْضُودٍ	وَزَيْلٍ	
दाएँ हाथ वाले	बेरियों में	बगैर कांटों के	और केलों में	तह ब तह	और सायों में	
مَبْدُودٍ	وَمَاءٍ	مَسْكُوبٍ	وَفَاكِهَةٍ	كَثِيرَةٍ	لَا	مَقْطُوعَةٍ
लम्बे	और पानी में	बहते हुए	और फलों में	बकसरत	ना	ख़त्म होने वाले
وَلَا	مَنْعُوعَةٍ	وَفُرْشٍ	مَرْفُوعَةٍ	إِنَّا	أَنْشَأْنَهُنَّ	
और ना	रोके जाने वाले	और नश्विस्तगाहों में	ऊँची	बेशक हम	पैदा किया हमने उन्हें	
إِنْشَاءً	فَجَعَلْنَهُنَّ	أَبْكَارًا	عُرْبًا	أَثَرًا	بَابًا	
नए सिरे से पैदा करना	तो बना दिया हमने उन्हें	कुंवारीयां	ख़ाबिदों की प्यारियां	हम उम्र		
لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ	ثَلَاثَةٌ	مِّنَ الْأَوَّلِينَ	وَتِلْكَ			
दाएँ हाथ वालों के लिए	एक बड़ा गिरोह होगा	पहलों में से	और एक बड़ा गिरोह होगा			
مِّنَ الْآخِرِينَ	وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ	مَا	أَصْحَابُ الشِّمَالِ			
पिछलों में से	और बाएँ हाथ वाले	क्या हैं	बाएँ हाथ वाले			
فِي سَبُومٍ	وَحَيِّمٍ	وَزَيْلٍ	مِّنْ يَّحْصُومٍ	لَا	بَارِدٍ	وَلَا
सख़्त गर्म हवा में	और खौलते पानी में	और साए में	सख़्त स्याह धुएँ के	ना	ठंडा	और ना
كَرِيمٍ	إِنَّهُمْ	كَانُوا	قَبْلَ	ذَلِكَ	مُتْرَفِينَ	وَكَانُوا
उम्दा	बेशक वो	थे वो	पहले	उससे	ख़ुशहाल	और थे वो
يُصِرُّونَ	عَلَى الْحِنْتِ	الْعَظِيمِ	وَكَانُوا	يَقُولُونَ	إِذَا	مِثْنَا
वो इसरार करते	गुनाह पर	बहुत बड़े	और थे वो	वो कहा करते	क्या जब	मर जाएँगे हम

وَكُنَّا	تُرَابًا وَعِظَامًا	ءَاِنَّا	لَبَعُوثُونَ 47	اَوْ	اَبَاؤُنَا
और हो जाएँगे हम	मिट्टी	और हड्डियाँ	क्या बेशक हम	अलबत्ता दोबारा उठाए जाने वाले हैं	क्या भला आबा ओ अजदाद हमारे
الْأَوَّلُونَ 48	قُلْ	إِنَّ	الْأَوَّلِينَ	وَالْآخِرِينَ 49	لَبَجُوعُونَ 50
पहले (भी)	कह दीजिए	बेशक	पहले	और पिछले	अलबत्ता जमा किए जाने वाले हैं
إِلَىٰ مِيقَاتٍ	يَوْمٍ مَّعْلُومٍ 50	ثُمَّ	إِنَّكُمْ	أَيُّهَا	الضَّالُّونَ
एक मुक़रर वक़्त पर	मालूम दिन के	फिर	बेशक तुम	ऐ	गुमराहो
الْمُكَذِّبُونَ 51	لَا يَكُونُونَ	مِنْ شَجَرٍ	مِّنْ زُقُومٍ 52	فَمَا لُؤُنَ	مِنْهَا
झुठलाने वालो	अलबत्ता खाने वाले हो	एक दरख़्त से	ज़क़ूम के	फिर भरने वाले हो	उससे
الْبُطُونَ 53	فَشْرِبُونَ	عَلَيْهِ	مِنَ الْحَمِيمِ 54	فَشْرِبُونَ	شَرِبَ
पेटों को	फिर पीने वाले हो	उस पर	खौलते पानी से	फिर पीने वाले हो	पीना
الْهِيمِ 55	هَذَا	نُرْلُهُمْ	يَوْمَ الدِّينِ 56	نَحْنُ	خَلَقْنَاهُ
प्यासे ऊंट (जैसा)	ये होगी	मेहमानी उनकी	दिन	हमने	पैदा किया हमने तुम्हें
فَلَوْلَا	تُصَدِّقُونَ 57	أَفَرَأَيْتُمْ	مَا تُمْنُونَ 58	ءَأَنْتُمْ	تَخْلُقُونَهُ
पस क्यों नहीं	तुम तस्दीक करते	क्या भला देखा तुमने	जो	क्या तुम	तुम पैदा करते हो उसे
أَمْ	نَحْنُ	الْخَالِقُونَ 59	نَحْنُ	قَدَّرْنَا	بَيْنَكُمْ
या	हम हैं	पैदा करने वाले	हमने	सुक्रद्वर किया हमने	दर्मियान तुम्हारे
نَحْنُ	بِسُبُوقَيْنِ 60	عَلَىٰ	أَنْ	نُبَدِّلَ	أَمْثَالَكُمْ
हम	आजिज़	इस पर	कि	हम बदल डालें	तुम जैसों को
وَنُنْشِئُكُمْ	فِي مَا	لَا تَعْلَمُونَ 61	وَلَقَدْ	عَلِمْتُمْ	النَّشْأَةَ
और हम नए सिरे से पैदा कर दें तुम्हें	ऐसी सूरत में जो	नहीं तुम जानते	और अलबत्ता तहक़ीक़	जान लिया तुमने	पैदाइश

الْأُولَى	فَلَوْ لَا	تَذَكَّرُونَ 62	أَفَرَأَيْتُمْ	مَا	تَحَرُّثُونَ 63	عَأَنْتُمْ
पहली को	तो क्यों नहीं	तुम नसीहत पकड़ते	क्या भला देखा तुमने	जो	तुम बोते हो	क्या तुम
تَزْرَعُونَهُ	أَمْ	نَحْنُ	الزُّرْعُونَ 64	لَوْ	نَشَاءُ	لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا
उगाते हो उसे	या	हम हैं	उगाने वाले	अगर	हम चाहें	अलबत्ता कर दें हम उसे
فَظَلْتُمْ	تَفَكَّهُونَ 65	إِنَّا	لَبُغْرَمُونَ 66	بَلْ	نَحْنُ	مَحْرُومُونَ 67
तो रह जाओ तुम	तुम बातें बनाते	बेशक हम	अलबत्ता तावान डाले गए हैं	बल्कि	हम तो	महरूम कर दिए गए हैं
أَفَرَأَيْتُمْ	الْبَاءَ الَّذِي	تَشْرَبُونَ 68	عَأَنْتُمْ	أَنْزَلْنَاهُ	مِنَ السَّمَاءِ	الْمِنْ
क्या भला देखा तुमने	पानी को	वो जो	तुम पीते हो	क्या तुम	उतारते हो तुम उसे	बादल से
أَمْ	نَحْنُ	الْمُنْزِلُونَ 69	لَوْ	نَشَاءُ	جَعَلْنَاهُ	أُجَاجًا
या	हम हैं	उतारने वाले	अगर	हम चाहें	बना दें हम उसे	सख्त खारा
تَشْكُرُونَ 70	أَفَرَأَيْتُمْ	النَّارَ	الَّتِي	تُورُونَ 71	عَأَنْتُمْ	أَنْشَأْتُمْ
तुम शुक्र करते	क्या फिर देखा तुमने	आग को	वो जो	तुम सुलगाते हो	क्या तुमने	पैदा किया तुमने
شَجَرَتَهَا	أَمْ	نَحْنُ	الْمُنْشِئُونَ 72	نَحْنُ	جَعَلْنَاهَا	تَذَكَّرَةً
दरख़्त उसका	या	हम हैं	पैदा करने वाले	हमने	बनाया हमने उसे	एक नसीहत
وَمَتَاعًا	لِلْمُقْوِينَ 73	فَسَبِّحْ	بِاسْمِ	رَبِّكَ	الْعَظِيمِ 74	فَلَا
और फ़ायदे की चीज़	मुसाफ़िरों के लिए	पस तस्बीह कीजिए	नाम की	अपने रब के	जो निहायत अज़मत वाला है	पस नहीं
أَقْسِمُ	بِسَوَاقِعِ	النُّجُومِ 75	وَإِنَّهُ	لَقَسَمٌ	لَّوْ تَعْلَمُونَ	عَظِيمٌ 76
मैं क़सम खाता हूँ	गिरने की जगहों की	सितारों के	और बेशक वो	अलबत्ता क़सम है	तुम जानते हो	बहुत बड़ी
إِنَّهُ	لَقُرْآنٌ	كَرِيمٌ 77	فِي كِتَابٍ	مَكْنُونٍ 78	لَا يَمَسُّهُ	إِلَّا
बेशक वो	यक़ीनन क़ुरआन है	इज़ज़त वाला	एक किताब में	महफूज़	नहीं छूते उसे	मगर

الْمُطَهَّرُونَ 79 ط	تَنْزِيلٌ	مِّن رَّبِّ	الْعَالَمِينَ 80	أَفَبِهَذَا	الْحَدِيثِ
जो बहुत पाक हैं	नाज़िल करदा है	रब की तरफ़ से	तमाम ज़हानों के	क्या भला इस	बात से
أَنْتُمْ	مُدْهِنُونَ 81 لا	وَتَجْعَلُونَ	رِزْقَكُمْ	أَنْتُمْ	تُكَذِّبُونَ 82
तुम	बेपरवाई करने वाले हो	और तुम बनाते हो	हिस्सा अपना	ये कि तुम	तुम झुठलाते हो
فَلَوْلَا	إِذَا	بَلَغَتْ	الْحُلُقُومَ 83 لا	وَأَنْتُمْ	حِينَئِذٍ
पस क्यों नहीं	जब	पहुंच जाती है (जान)	हलक़ को	और तुम	उस वक़्त
وَنَحْنُ	أَقْرَبُ	إِلَيْهِ	مِنْكُمْ	وَلَكِنْ	لَّا
और हम	ज़्यादा करीब होते हैं	उसके	तुम से	और लेकिन	नहीं
إِنْ	كُنْتُمْ	غَيْرَ مَدِينِينَ 86 لا	تَرْجِعُونَهَا	إِنْ	كُنْتُمْ
अगर	हो तुम	नहीं बदला दिए जाने वाले	तुम लौटाते उसे	अगर	हो तुम
فَأَمَّا	إِنْ	كَانَ	مِنَ الْبُقَرَّبِينَ 88 لا	فَرَوْحٌ	وَرِيحَانٌ 85 لا
पस लेकिन	अगर	है वो	मुकर्रबीन में से	तो राहत है	और उम्दा रिज़क़ है
نَعِيمٌ 89	وَأَمَّا	إِنْ	كَانَ	مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ 90 لا	فَسَلَامٌ
नेअमतों वाली	और लेकिन	अगर	है वो	दाएँ जानिब वालों में से	तो सलाम है
مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ 91 ط	وَأَمَّا	إِنْ	كَانَ	مِنَ الْبُكَذِّبِينَ	
(कि तुम) दाएँ जानिब वालों में से हो	और लेकिन	अगर	है वो	झुठलाने वालों में से	
الضَّالِّينَ 92 لا	فَنُزِّلُ	مِّنْ حَيِّمٍ 93 لا	وَتَصْلِيَةٌ	جَحِيمٍ 94	إِنَّ هَذَا
गुमराह लोगों में से	तो मेहमानी है	खौलते पानी से	और जलना है	जहन्नम में	बेशक
لَهُوَ	حَقٌّ	الْيَقِينِ 95 ج	فَسَبِّحْ	بِاسْمِ	رَبِّكَ
अलबत्ता वो ही है	जो हक़ है	यक़ीनी	पस तस्बीह कीजिए	नाम की	अपने रब के
عَ 96	الْعَظِيمِ				
जो निहायत अज़मत वाला है					

رُكُوعَاتُهَا: 4

57 سُورَةُ الْحَدِيدِ مَدَنِيَّةٌ 94

آيَاتُهَا: 29

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ	لِلَّهِ	مَا	فِي السَّمَوَاتِ	وَالْأَرْضِ ٥	وَهُوَ	الْعَزِيزُ
तस्बीह की है	अल्लाह के लिए	उस चीज़ ने जो	आसमानों में	और ज़मीन में है	और वो	बहुत ज़बरदस्त है
الْحَكِيمُ ①	لَهُ	مُلْكُ	السَّمَوَاتِ	وَالْأَرْضِ ٥	يُحْيِي	وَيُمِيتُ ٥
खूब हिक्मत वाला है	उसी के लिए है	बादशाहत	आसमानों	और ज़मीन की	वो ज़िंदा करता है	और वो मौत देता है
وَهُوَ	عَلَى	كُلِّ شَيْءٍ	قَدِيرٌ ②	هُوَ	الْأَوَّلُ	وَالْآخِرُ
और वो	ऊपर	हर	चीज़ के	खूब कुदरत रखने वाला है	अव्वल है	और आखिर है
وَالظَّاهِرُ	وَالْبَاطِنُ ٥	وَهُوَ	بِكُلِّ شَيْءٍ	عَلِيمٌ ③	هُوَ	الَّذِي
और ज़ाहिर है	और बातिन है	और वो	हर	चीज़ को	खूब जानने वाला है	वो ही है जिसने
خَلَقَ	السَّمَوَاتِ	وَالْأَرْضِ	فِي سِتَّةِ	أَيَّامٍ	ثُمَّ	اسْتَوَى
पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	छः	दिनों में	फिर	वो बुलंद हुआ
عَلَى الْعَرْشِ ٦	يَعْلَمُ	مَا	يَلْبِغُ	فِي الْأَرْضِ	وَمَا	يَخْرُجُ مِنْهَا
अर्श पर	वो जानता है	जो कुछ	दाखिल होता है	ज़मीन में	और जो कुछ	निकलता है उससे
وَمَا	يَنْزِلُ	مِنَ السَّمَاءِ	وَمَا	يَعْرُجُ	فِيهَا ٦	وَهُوَ
और जो कुछ	उतरता है	आसमान से	और जो कुछ	चढ़ता है	उसमें	और वो तुम्हारे साथ है
أَيْنَ مَا	كُنْتُمْ ٦	وَاللَّهُ	بِمَا	تَعْمَلُونَ	بَصِيرٌ ④	لَهُ
जहाँ कहीं	हो तुम	और अल्लाह	उसे जो	तुम अमल करते हो	खूब देखने वाला है	उसी के लिए है
مُلْكُ	السَّمَوَاتِ	وَالْأَرْضِ ٦	وَإِلَى اللَّهِ	تُرْجَعُ	الْأُمُورُ ⑤	يُؤَلِّجُ
बादशाहत	आसमानों	और ज़मीन की	और अल्लाह ही की तरफ़	लौटाए जाते हैं	सब काम	वो दाखिल करता है

الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوجِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ٥ وَهُوَ عَلِيمٌ	الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوجِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ٥ وَهُوَ عَلِيمٌ	الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوجِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ٥ وَهُوَ عَلِيمٌ	الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوجِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ٥ وَهُوَ عَلِيمٌ	الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوجِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ٥ وَهُوَ عَلِيمٌ	الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوجِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ٥ وَهُوَ عَلِيمٌ	الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوجِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ٥ وَهُوَ عَلِيمٌ
रात को	दिन में	और वो दाखिल करता है	दिन को	रात में	और वो	खूब जानने वाला है
بِذَاتِ الصُّدُورِ ٦	أَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا	بِذَاتِ الصُّدُورِ ٦	أَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا	بِذَاتِ الصُّدُورِ ٦	أَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا	بِذَاتِ الصُّدُورِ ٦
सीनों वाले (भेद)	ईमान लाओ	अल्लाह पर	और उसके रसूल पर	और खर्च करो	उससे जो	
جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ٥ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا	جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ٥ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا	جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ٥ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا	جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ٥ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا	جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ٥ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا	جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ٥ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا	جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ٥ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا
उसने बनाया तुम्हें	जानशीन	उस (माल) में	तो वो लोग जो	ईमान लाए	तुम में से	और उन्होंने खर्च किया
لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ٥ وَالرَّسُولُ	لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ٥ وَالرَّسُولُ	لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ٥ وَالرَّسُولُ	لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ٥ وَالرَّسُولُ	لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ٥ وَالرَّسُولُ	لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ٥ وَالرَّسُولُ	لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ٥ وَالرَّسُولُ
उनके लिए	अज्र है	बहुत बड़ा	और क्या है	तुम्हें	नहीं तुम ईमान लाते	अल्लाह पर जब कि रसूल
يَدْعُوَكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ	يَدْعُوَكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ	يَدْعُوَكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ	يَدْعُوَكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ	يَدْعُوَكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ	يَدْعُوَكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ	يَدْعُوَكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ
वो दावत देता है तुम्हें	कि तुम ईमान लाओ	अपने रब पर	हालांकि तहक्रीक	उसने लिया है	पुख्ता अहद तुम से	अगर
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٨ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ آيَاتٍ	كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٨ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ آيَاتٍ	كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٨ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ آيَاتٍ	كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٨ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ آيَاتٍ	كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٨ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ آيَاتٍ	كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٨ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ آيَاتٍ	كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٨ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ آيَاتٍ
हो तुम	ईमान लाने वाले	वो ही है	जो	नाज़िल करता है	अपने बंदे पर	आयात
بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ٥ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ	بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ٥ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ	بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّलُمَاتِ إِلَى النُّورِ ٥ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ	بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ٥ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ	بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ٥ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ	بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ٥ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ	بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ٥ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ
बाज़ेह	ताकि वो निकाले तुम्हें	अंधेरों से	तरफ़ रोशनी के	और बेशक	अल्लाह	तुम पर
لَرَّءَوْفٌ رَّحِيمٌ ٩ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ	لَرَّءَوْفٌ رَّحِيمٌ ٩ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ	لَرَّءَوْفٌ رَّحِيمٌ ٩ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ	لَرَّءَوْفٌ رَّحِيمٌ ٩ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ	لَرَّءَوْفٌ رَّحِيمٌ ٩ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ	لَرَّءَوْفٌ رَّحِيمٌ ٩ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ	لَرَّءَوْفٌ رَّحِيمٌ ٩ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
अलबत्ता बहुत शफ़क़त करने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और क्या है	तुम्हें	कि नहीं	तुम खर्च करते	अल्लाह के रास्ते में
وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ٥ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ	وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ٥ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ	وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ٥ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ	وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ٥ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ	وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ٥ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ	وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ٥ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ	وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ٥ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ
और अल्लाह ही के लिए है	मीरास	आसमानों की	और ज़मीन की	नहीं	बराबर हो सकता	तुम में से
مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلٍ ٥ أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً	مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلٍ ٥ أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً	مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلٍ ٥ أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً	مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلٍ ٥ أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً	مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلٍ ٥ أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً	مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلٍ ٥ أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً	مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلٍ ٥ أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً
वो जिसने	खर्च किया	पहले	फ़तह के	और जंग की	यही लोग हैं	ज़्यादा बड़े दर्जे में

مِّنَ الَّذِينَ	انْفَقُوا	مِنْ بَعْدُ	وَقَتَلُوا ط	وَكُلًّا	وَعَدَ	اللَّهُ
उनसे जिन्होंने	खर्च किया	इसके बाद	और उन्होंने जंग की	और हर एक से	वादा किया	अल्लाह ने
الْحُسْنَى ط	وَاللَّهُ	بِمَا	تَعْمَلُونَ	خَيْرٌ ع 10	مَنْ ذَا الَّذِي	يُقْرِضُ
भलाई का	और अल्लाह	उसकी जो	तुम अमल करते हो	खूब खबर रखने वाला है	कौन है जो	क़र्ज देगा
اللَّهُ	قَرْضًا	حَسَنًا	فِيُضِعُّهُ	لَهُ	وَلَهُ	أَجْرٌ ج 11
अल्लाह को	क़र्ज	अच्छा	फिर वो दोगुना करेगा उसे	उसके लिए	और उसी के लिए है	अजर
يَوْمَ	تَرَى	الْمُؤْمِنِينَ	وَالْمُؤْمِنَاتِ	يَسْعَى	نُورَهُمْ	بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
जिस दिन	आप देखेंगे	मोमिन मर्दों को	और मोमिन औरतों को	दौड़ता होगा	नूर उनका	उनके आगे-आगे
وَبَايَعَانِهِمْ	بُشْرَكُمْ	الْيَوْمَ	جَنَّتْ	تَجْرِي	مِنْ تَحْتِهَا	الْأَنْهَارُ
और उनकी दाएं जानिब	खुशखबरी है तुम्हें	आज के दिन	ऐसे बागात की	बहती हैं	जिनके नीचे से	नहरें
خَلِيدِينَ	فِيهَا ط	ذَلِكَ	هُوَ	الْفَوْزُ	الْعَظِيمُ ج 12	يَوْمَ يَقُولُ
हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	यही है	वो	कामयाबी	बहुत बड़ी	जिस दिन कहेंगे
الْمُنْفِقُونَ	وَالْمُنْفِقَتُ	لِلَّذِينَ	أَمَنُوا	انْظُرُونَا	نَقْتَبِسُ	
मुनाफ़िक़ मर्द	और मुनाफ़िक़ औरतें	उन्हें जो	ईमान लाए	इतिज़ार करो हमारा	हम रोशनी हासिल करें	
مِنْ نُورِكُمْ ج	قِيلَ	ارْجِعُوا	وَرَاءَكُمْ	فَالْتَبِسُوا	نُورًا ط	فَضْرَبَ
तुम्हारे नूर से	कह दिया जाएगा	लौट जाओ	अपने पीछे	फिर तलाश करो	नूर को	तो हाइल कर दी जाएगी
بَيْنَهُمْ	بِسُورٍ	لَّهُ	بَابٌ ط	بَاطِنُهُ	فِيهِ الرَّحْمَةُ	وَزَاهِرُهُ
दर्मियान उनके	एक दीवार	उसका	एक दरवाज़ा होगा	उसकी अंदरूनी जानिब	जिस में	रहमत होगी
مِنْ قَبْلِهِ	الْعَذَابُ ع 13	يُنَادُونَهُمْ	أَلَمْ	نَكُنْ	مَعَكُمْ ط	قَالُوا
उस तरफ़ से	अज़ाब होगा	वो पुकारेंगे उन्हें	क्या ना	थे हम	साथ तुम्हारे	वो कहेंगे

بَلَىٰ	وَلَكِنَّكُمْ	فَتَنَّتُمْ	أَنْفُسَكُمْ	وَتَرَبَّصْتُكُمْ	وَأَرْتَبْتُكُمْ
क्यों नहीं	और लेकिन तुम	फ़ितने में डाला तुमने	अपने आपको	और इंतज़ार में रहे तुम	और शक किया तुमने
وَعَرَّيْتُكُمْ	الْأَمَانِي	حَتَّىٰ	جَاءَ	أَمْرُ	اللَّهِ
और धोखे में डाला तुम्हें	तमन्नाओं ने	यहां तक कि	आ गया	क़ैसला	अल्लाह का
بِاللَّهِ	الْغُرُورُ ⑭	فَالْيَوْمَ	لَا يُؤْخَذُ	مِنْكُمْ	فِدْيَةٌ
अल्लाह के बारे में	उस बड़े धोखेबाज़ ने	तो आज	ना लिया जाएगा	तुम से	कोई फ़िदया
مِنَ الَّذِينَ	كَفَرُوا ①	مَاؤُكُمْ	النَّارُ ②	هِيَ	مَوْلَكُمْ ③
उनसे जिन्होंने	कुफ़र किया	ठिकाना तुम्हारा	आग है	वो ही	दोस्त है तुम्हारी
الْبَصِيرُ ⑮	أَلَمْ	يَأْنِ	لِلَّذِينَ	أَمَنُوا	أَنْ
लौटने की जगह	क्या नहीं	वक़्त आया	उनके लिए जो	ईमान लाए	कि
لِذِكْرِ	اللَّهِ	وَمَا	نَزَلَ	مِنَ الْحَقِّ ④	وَلَا
ज़िक्र के लिए	अल्लाह के	और जो	नाज़िल हुआ	हक़ में से	और ना
أَوْثُوا	الْكِتَابَ	مِنْ قَبْلُ	فَطَالَ	عَلَيْهِمْ	الْأَمَدُ
दिए गए	किताब	इससे क़ब्ल	तो तवील हो गई	उन पर	मुदत
وَكَثِيرٌ	مِنْهُمْ	فَسِقُونَ ⑯	إِعْلَمُوا ⑥	أَنَّ	اللَّهِ
और अक्सर	उनमें से	नाफ़रमान हैं	जान लो	बेशक	अल्लाह
بَعْدَ	مَوْتِهَا ⑦	قَدْ	بَيَّنَّا	لَكُمْ	الْآيَاتِ
बाद	उसकी मौत के	तहक़ीक़	बयान कर दीं हम ने	तुम्हारे लिए	आयात
إِنَّ	الْبَصِيقَيْنِ	وَالْبَصِيقَاتِ	وَاقْرَءُوا	اللَّهِ	قَرَضًا
बेशक	सदक़ा करने वाले मर्द	और सदक़ा करने वाली औरतें	और जिन्होंने क़र्ज़ दिया	अल्लाह को	क़र्ज़

يُضَعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ⑱ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ	अल्लाह पर ईमान लाए और वो जो इज़्जत वाला अज्र और उन्हीं के लिए है उनके लिए	दोगुना कर दिया जाएगा
وَرُسُلِهِ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ⑲ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ط	और उसके रसूलों पर यही लोग हैं वो जो सच्चे हैं और गवाही देने वाले हैं अपने रब के पास	
لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ط وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا	और नूर उनका अजर उनका उन्हीं के लिए है और वो जिन्होंने कुफ़ किया और उन्होंने झुठलाया हमारी आयात को	
أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ⑲ عِ ٢٠ اَعْلَمُوا أَنبَا الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لَعِبٌ	यही लोग हैं साथी जहन्नम के जान लो बेशक ज़िंदगी दुनिया की खेल	
وَلَهُمْ وَلَهُمْ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ	और तमाशा और ज़ीनत और बाहम फ़ख़र करना है आपस में और एक दूसरे पर कसरत हासिल करना है मालों में	
وَالْأَوْلَادُ ط كَثَلٌ غِيثٌ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ	और औलाद में मानिंद मिसाल बारिश के है खुश कर दिया किसानों को उसकी नबातात ने फिर	
يَهْيِجُ فِتْرَتَهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا ٢١ وَفِي الْآخِرَةِ	वो खुश हो जाती है फिर वो झड़ हो गई फिर वो हो जाती है चूरा-चूरा और आखिरत में	
عَذَابٌ شَدِيدٌ ٢٢ وَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ط وَمَا الْحَيَاةُ	अज़ाब है सख़्त और बख़्शिश अल्लाह की तरफ़ से और रज़ामंदी और नहीं ज़िंदगी	
الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ⑳ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ	दुनिया की मगर सामान धोखे का दौड़ो तरफ़ बख़्शिश के अपने रब की	
وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ٢٣ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ	और जन्नत के चौड़ाई जिसकी जैसे चौड़ाई आसमान और ज़मीन की वो तैयार की गई है उनके लिए जो	

أَمِنُوا بِاللَّهِ	وَرُسُلِهِ ٥	ذَلِكَ	فَضْلُ	اللَّهِ	يُؤْتِيهِ	مَنْ
ईमान लाए	अल्लाह पर	और उसके रसूलों पर	ये	फ़ज़ल है	अल्लाह का	जिसे
يَشَاءُ ٥	وَاللَّهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيمِ 21	مَا	أَصَابَ	مِنْ مُصِيبَةٍ
वो चाहता है	और अल्लाह	फ़ज़ल वाला है	बहुत बड़े	नहीं	पहुंचती	कोई मुसीबत
فِي الْأَرْضِ وَلَا	فِي أَنْفُسِكُمْ	إِلَّا	فِي كِتَابٍ	مِّن قَبْلِ	أَنْ	
ज़मीन में	और ना	तुम्हारे नफ़्सों में	मगर	एक किताब में है	इससे पहले	कि
نَبَرَأَهَا ٥	إِنَّ	ذَلِكَ	عَلَى اللَّهِ	يَسِيرٌ 22	يَكِيلًا	تَأْسُوا عَلَى مَا
हम पैदा करें उसे	बेशक	ये	अल्लाह पर	बहुत आसान है	ताकि ना	तुम अफ़सोस करो
فَاتِكُمْ وَلَا	تَفْرَحُوا	بِمَا	آتَاكُمْ ٥	وَاللَّهُ	لَا	يُحِبُّ كُلَّ
खो जाए तुम से	और ना	तुम इतराओ	उस पर जो	उसने दिया तुम्हें	और अल्लाह	नहीं
مُخْتَالٍ	فَخُورٍ 23	الَّذِينَ	يَبْخُلُونَ	وَيَأْمُرُونَ	النَّاسَ	
खुदपसंद	बहुत फ़ख़्र जताने वाले को	वो लोग जो	बुख़ल करते हैं	और वो हुक़्म देते हैं	लोगों को	
بِالْبُخْلِ ٥	وَمَنْ	يَتَوَلَّ	فَإِنَّ	اللَّهَ	هُوَ	الْغَنِيُّ 24
बुख़ल का	और जो कोई	मुंह फेरता है	तो बेशक	अल्लाह	वो ही है	बहुत बेनियाज़
لَقَدْ	أَرْسَلْنَا	رُسُلَنَا	بِالْبَيِّنَاتِ	وَأَنْزَلْنَا	مَعَهُمُ	الْكِتَابَ
अलबत्ता तहकीक	भेजा हमने	अपने रसूलों को	साथ वाज़ेह निशानियों के	और नाज़िल की हमने	साथ उनके	किताब
وَالْبِيزَانَ	لِيَقُومَ	النَّاسُ	بِالْقِسْطِ ٥	وَأَنْزَلْنَا	الْحَدِيدَ	فِيهِ
और मीज़ान	ताकि क़ायम हों	लोग	इंसाफ़ पर	और उतारा हमने	लोहा	जिसमें
بَأْسٍ شَدِيدٍ	وَمَنَافِعُ	لِلنَّاسِ	وَلِيَعْلَمَ	اللَّهُ	مَنْ	يَنْصُرُهُ
ज़ोर है	सख़्त	और कई फ़ायदे हैं	लोगों के लिए	और ताकि जान ले	कौन	मदद करता है उसकी

وَرُسُلَهُ	بِالْغَيْبِ ٥	إِنَّ	اللَّهَ	قَوِيٌّ	عَزِيزٌ ٢٥	وَلَقَدْ	أَرْسَلْنَا
और उसके रसूलों की	गायबाना	बेशक	अल्लाह	बहुत कुव्वत वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	और अलबत्ता तहकीक़	भेजा हमने
نُوحًا وَابْرَاهِيمَ	وَجَعَلْنَا	فِي ذُرِّيَّتَيْهَا	النُّبُوَّةَ	وَالْكِتَابَ	فِيهِمْ	تُوْحًا	وَابْرَاهِيمَ
नूह	और इब्राहीम को	और रखी हमने	उन दोनों की औलाद में	तुबूव्वत	और किताब	तो कुछ उनमें से	नूह
مُتَّهِدٍ ٦	وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ	فَسِقُونَ ٢٦	ثُمَّ	قَفَيْنَا	عَلَىٰ أَثَارِهِمْ	مُتَّهِدٍ ٦	وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ
हिदायत याफ़्ता हैं	और अक्सर	उनमें से	फ़ासिक हैं	फिर	पै दर पै भेजे हमने	उनके आसार पर	मूह्द
بِرُسُلِنَا	وَقَفَيْنَا	بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ	وَأَتَيْنَاهُ	الْإِنْجِيلَ ٧	بِرُسُلِنَا	وَقَفَيْنَا	بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ
अपने रसूल	और पीछे भेजा हमने	ईसा इब्ने मरियम को	और अता की हमने उसे	इंजील	अपने रसूल	और पीछे भेजा हमने	ईसा इब्ने मरियम को
وَجَعَلْنَا	فِي قُلُوبِ	الَّذِينَ	اتَّبَعُوهُ	رَافَةً ٨	وَرَحْمَةً ٩	وَجَعَلْنَا	فِي قُلُوبِ
और डाल दिया हमने	दिलों में	उन लोगों के जिन्होंने	पैरवी की उसकी	शफ़क़त	और रहमत को	और डाल दिया हमने	दिलों में
وَرَهْبَانِيَّةً ١٠	أَبْتَدَعُوهَا	مَا كَتَبْنَاهَا	عَلَيْهِمْ	إِلَّا	أُبْتِغَاءَ	وَرَهْبَانِيَّةً ١٠	أَبْتَدَعُوهَا
और रहबानियत/तर्क कर देना	उन्होंने ईजाद कर लिया उसे	नहीं फ़र्ज़ किया था हमने उसे	उन पर	मगर	हासिल करने को	और रहबानियत/तर्क कर देना	उन्होंने ईजाद कर लिया उसे
رِضْوَانِ	اللَّهِ	فَبَا	رَعَوْهَا	حَقٌّ	رِعَايَتِهَا ١١	فَاتَيْنَا	رِضْوَانِ
रज़ा	अल्लाह की	तो नहीं	उन्होंने ख़याल रखा उसका	जैसे हक़ था	उसका ख़याल रखने का	तो दिया हमने	रज़ा
الَّذِينَ آمَنُوا	مِنْهُمْ	أَجْرَهُمْ ١٢	وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ	فَسِقُونَ ٢٧	الَّذِينَ آمَنُوا	مِنْهُمْ	أَجْرَهُمْ ١٢
उन लोगों को जो	ईमान लाए	उनमें से	अजर उनका	और अक्सर	उनमें से	फ़ासिक हैं	उन लोगों को जो
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا	اتَّقُوا اللَّهَ	وَأَمِنُوا بِرَسُولِهِ	يُؤْتِكُمْ	كَفْلَيْنِ	يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا	اتَّقُوا اللَّهَ	وَأَمِنُوا بِرَسُولِهِ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	डरो	अल्लाह से	और ईमान लाओ	उसके रसूल पर	वो देगा तुम्हें	दो हिस्से
مِنْ رَحْمَتِهِ	وَيَجْعَلُ	لَكُمْ	نُورًا	تَمْشُونَ	بِهِ	وَيَغْفِرُ	مِنْ رَحْمَتِهِ
अपनी रहमत में से	और वो बना देगा	तुम्हारे लिए	एक नूर	तुम चलोगे	साथ उसके	और वो बख़्श देगा	अपनी रहमत में से

لَكُمْ ط	وَاللَّهُ	غَفُورٌ	رَّحِيمٌ 28	لِّعَلَّا	يَعْلَمَ	أَهْلُ الْكِتَابِ
तुम्हें	और अल्लाह	बहुत बख्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	ताकि	जान लें	अहले किताब
أَلَّا	يَقْدِرُونَ	عَلَى شَيْءٍ	مِّنْ فَضْلٍ	اللَّهُ	وَأَنَّ	الْفَضْلَ
ये कि नहीं	वो कुदरत रखते	किसी चीज़ पर	फ़ज़ल में से	अल्लाह के	और बेशक	फ़ज़ल
بِإِذْنِ اللَّهِ	يُؤْتِيهِ	مَنْ	يَشَاءُ ط	وَاللَّهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيمِ 29
अल्लाह के हाथ में है	वो देता है उसे	जिसे	वो चाहता है	और अल्लाह	फ़ज़ल वाला है	बहुत बड़े